जापानी साम्राज्यवाद एवं प्रथम विश्व-युद्ध

28 जून से 4 अगस्त 1914 ई. तक किसी न किसी घटना के फलस्वरूप यूरोप की राजनीति में हलचल मच गई। रूस, फ्रांस, इंगलैंड ने आस्ट्रिया तथा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया।

'जापान ने प्रथम विश्वयुद्ध में मंचूरिया के बाहर एशिया महाद्वीप में अपने प्रभुत्व और साम्राज्य प्रसार का सुनहरा अवसर देगा।' सुदूर पूर्व में 1914 ई. में महायुद्ध आरम्भ हुआ। उस समय तक जापान का प्रभुत्व व प्रसार एक निश्चित सीमा तक हो गया था। विश्वयुद्ध के प्रति जापान के तीन दृष्टिकोण थे–तटस्थ रहना अथवा मित्र राष्ट्रों का साथ देना अथवा जर्मनी का साथ देना। जापान की सरकार और बड़े राजनीतिज्ञ जर्मनी का साथ देना चाहते थे। परन्तु जर्मनी ने जापान की शर्तें नहीं मानीं। अतः उसका साथ देने का प्रश्न समाप्त हो गया। जापान के विदेश-मंत्री केटो ने मित्र राष्ट्रों का साथ देने की पैरवी की। इंगलैंड का प्रार्थना-पत्र या स्मृति-पत्र जिसमे यह लिखा था कि "यदि सम्भव हो सके तो जापानी नौसेना अंग्रेजी व्यापार को क्षति पहुंचाने वाले सशस्त्र जर्मनी जहाजों का पीछा कर उनका विनाश कर दे, मानने के लिए उसने मंत्रिमंडल को राजी कर लिया और केटो ने ब्रिटिश सरकार को इस बात की सूचना दे दी। 23 अगस्त, 1914 ई. को जापान ने युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से शामिल होने की घोषणा कर दी। 4 सितम्बर, 1914 ई. की लन्दन सभा में जापान को सम्मिलित करने का रूस तथा फ्रांस ने जोर दिया। अतः अक्टूबर, 1915 ई. में जापान भी फ्रांस, इंगलैंड तथा रूस के साथ आ गया। यहां यह तय हुआ कि अब जापान

Scanned with CamScanner

मित्र राष्ट्रों (फ्रांस, ब्रिटेन, रूस) के साथ ही शान्ति स्थापना में भाग लेगा तथा कोई भी देश पृथक-पृथक शत्रु के साथ संधि नहीं करेगा।

जापान का प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश करने का उद्देश्य: जापान का उद्देश्य पूर्वी एशिया में जर्मनी का प्रभाव नष्ट करके अपनी स्थिति मजबूत करना था। 1898 ई. में जर्मनी ने चीन के शान्तुंग और क्याऊचाऊ प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया था। साथ ही साथ, चीन से एक संधि की जिसके अन्तर्गत जर्मनी ने चीन में क्याऊचाऊ की खाड़ी के समुद्र-तट पर 200 मील का प्रदेश 11 वर्ष के पट्टे पर ले लिया था। यही नहीं, जर्मन ने इस प्रदेश में किलेबन्दी करने, रेलवे लाइन बनाने, खानें खोदने के विशेषाधिकार भी प्राप्त कर लिये थे। इस प्रकार यह प्रदेश प्रशान्त महासागर में जर्मनी का प्रमुख सैनिक-क्षेत्र बन गया था। यह सब पूर्व में जापान की विस्तार-नीति के विरुद्ध था। अत: जापान और जर्मनी में कटुता पैदा होना स्वाभाविक था। अत: अपना उद्देश्य प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश करने से पूरा होने की सम्भावना देखकर जापान ने 4 अगस्त को जर्मन सरकार से यह मांग कर दी कि वह जापान को एशियाई समुद्र वाले सभी जहाज सौंप दें और उसे क्याऊचाऊ का पट्टा तथा शान्तुंग प्रदेश में अपने अधिकार दे दे। 15 अगस्त को जापान ने जर्मनी को एक चेतावनी भी दी। जब जर्मनी ने कुछ उत्तर नहीं दिया तो जापान ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध की घटनाएं: 27 अगस्त को जापानी सेनाओं ने त्सिगताओ को घेर लिया तथा 2 सितम्बर को उस पर अधिकार कर लिया।

अक्तूबर के अंत जापानी सेनाओं ने प्रत्येक स्थान पर जर्मनी सेनाओं पर हमला बोल दिया। 10 नवम्बर को क्याऊचाऊ का पतन हो गया और उस क्षेत्र की रेलवे लाइनों पर जापान ने अधिकार कर लिया। प्रशान्त तथा हिन्द महासागर में ब्रिटिश तथा जापानी नौसेना ने मिलकर जर्मनी नौसेना का मुकाबला किया। उसी दौरान जापानी जंगी जहाजों ने भूमध्य के उत्तर में "मारियाना, केरोलीन तथा मार्शल द्वीपों" पर अपना कब्जा कर लिया। अब आस्ट्रेलिया से दक्षिणी अफ्रीका तक का सारा समुद्र जापान के जंगी जहाजों के संरक्षण में आ गया था।

इसी समय सैनिक सफलताओं के दौरान जापान ने फरवरी, 1917 ई. को इंगलैंड से एक संधि कर ली जिसकी शर्तों के अनुसार इंगलैंड ने यह आश्वासन दिया था कि वह युद्ध के बाद शान्तुंग प्रदेश तथा प्रशान्त महासागर के द्वीपों पर जापानी अधिकार का समर्थन करेगा।

Scanned with CamScanner

जापान की 21 मांगें: विश्वयुद्ध के समय में सारे यूरोपीय देश युद्ध में व्यस्त थे और किसी का भी ध्यान चीन की ओर नहीं था। जापान ने इस अवसर का लाभ उठाकर चीन पर अपना प्रभाव स्थापित करने का सुनहरा मौका देखा। इसी समय चीन में 1911 की राज्य क्रान्ति के बाद मंचू राजवंश का पतन हो चुका था और चीन गणतंत्र अपने को शक्तिशाली बनाने की कोशिश कर रहा था। इस समय चीन गणतंत्र का राष्ट्रपति यूआन-शिकाई था। चीनी जनता जापानियों के विरुद्ध थी। यूआन की सेना ने नानकिंग पर अधिकार करते समय जापानियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया था। इसी घटना की आड़ में जापानी सरकार ने चीन में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया। अत: उसने अक्टूबर, 1913ई. में यूआन को यह चेतावनी दी कि वह जापानियों की क्षतिपूर्ति करे। यूआन में उसकी मांग स्वीकार कर ली और जापान को उसे पांच रेल-मार्ग बनाने की इजाजत भी देनी पड़ी। इसके बाद जापान ने 18 जनवरी, 1915 ई. को यूआन के सामने अपनी 21 मांगों का का एक पत्र दिया जिसमें यह लिखा था कि "**प्रथम,** यदि इन मांगों को नहीं माना गया तो सैन्य शक्ति का प्रयोग किया जाएगा। **दूसरे,** चीन विप्लवकारियों को जन-धन देकर यूआन की सरकार के विरुद्ध कर दिया जाएगा। **तीसरे,** यदि इन मांगों को स्वीकार कर लिया जायेगा तो चीन में राजतंत्र की स्थापना में सहायता दी जाएगी।" पेकिंग ने कोई चारा न देखकर इन शर्तों को मान लिया जिन्हें कई संधियों और पत्र-व्यवहारों में लिखकर स्पष्ट किया गया। इन मांगों के विरोध में चीन में बड़ा भारी आन्दोलन हुआ। अत: जापान सरकार को कुछ मांगे वापस करनी पड़ी। शेष मांगों को मानने के लिए उसने चीन की विशेष अवधि निश्चित की अथवा उसे युद्ध की धमकी दी। यूआन को जापान की ये मांगे मानने के लिए विवश होना पड़ा। अत: 25 मई, 1915 ई. को चीन और जापान में एक संधि हुई जिसके परिणामस्वरूप जापान के साम्राज्यवादी विस्तार में पर्याप्त वृद्धि हुई।

1915 की संधि: 25 मई, 1915 ई. की संधि में जो शर्तें मान ली गईं वे इस प्रकार थीं–

(1) डालना, पोर्टआर्थर, दक्षिणी मंचूरिया तथा आंतरिक मंगोलिया में रेल के मार्गों में पट्टे का काल 99 वर्ष कर दिया जाय। (2) जापानी नागरिकों को दक्षिणी मंचूरिया में रहने, यात्रा करने, उद्योग व व्यापार खोलने, भूमि प्राप्त करने और उस पर खेती व व्यापार करने की स्वतंत्रता दी जाय। (3) चीन में संयुक्त चीनी-जापानी उद्योग की अनुमति दी जाये। (4) जापानी अपराधियों को दण्ड

Scanned with CamScanner

देने के लिए क्षेत्रातीयता का सिद्धान्त लागू होगा। (5) पूर्वी भीतरी मंगोलिया में विदेशियों के निवास तथा व्यापार करने के लिए उचित स्थान खोले जायें। (6) जापानी हित में किटिन-चांग-चुंग रेलमार्ग के लिए ऋण समझौते दोहराये जायें। (7) इन क्षेत्रों मं सैनिक, राजनीतिक, वित्ती सलाहकार जापानी ही होगे। (8) जर्मनी-जापान के बीच हुए समझौतों को चीन मान्यता देगा। (9) जापानियों को चकूवीहसीन रेल-मार्ग में पूँजी लगाने की अनुमति दी जाय। (10) इस प्रान्त में अथवा प्रान्त से लगे समुद्र तट पर किसी भी विदेशी देश को अधिकार नहीं दिया जाएगा। और, (11) हान-येह-पिंग रेल-मार्ग में चीनी कम्पनी का जापानी पूंजीपतियों के सहयोग से प्रशासन होगा।

इन मांगों की स्वीकृति के फलस्वरूप जापान चीन में अपनी शक्ति का विस्तार बराबर करता रहा। तत्कालीन परिस्थितियों में इन समझौतों को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता भी मिल गई। परन्तु अमेरिका इनसे सहमत नहीं था। फिर भी वह जापान का चीन में खुल्लम-खुल्ला विरोध न कर सका।

1917 की गुप्त सन्धियां: 1917 ई. में (i) जापान और फ्रांस तथा इंगलैंड के बीच तथा (ii) जापान और इटली के बीच सन्धियां हुईं। इन सन्धियों द्वारा मित्र राष्ट्रों ने चीन के शान्तुंग प्रान्त जापान को उसकी युद्ध में सहायता के उपलक्ष में उपहार में दिया। ये सन्धियां बड़ी नाजुक स्थिति में की गई थीं। उस समय अर्थात् 1917 ई. में रूस की साम्यवादी सरकार ने अपनी अन्दरूनी समस्याओं जैसे, बोल्शेविक क्रान्ति तथा जारशाही के अन्त होने के कारण विश्व-युद्ध में शामिल होने से इन्कार कर दिया था। इसकी वजह से मित्र-राष्ट्रों का पक्ष कुछ दुर्बल पड़ गया था। जर्मनी में जंगी जहाज तथा पनडुब्बियां मित्र राष्ट्रों के जंगी जहाजों को नष्ट कर रही थीं। इस भयंकर स्थिति में मित्रराष्ट्रों ने जापान की सहायता लेना बड़ा आवश्यक समझा। अत: जापान से भूमध्य सागर में अपना जंगी-बेड़ा भेजकर मित्र राष्ट्रों की सहायता करने की प्रार्थना की गई। जापान ने इस अवसर का लाभ उठाया और मित्रराष्ट्रों तथा इटली से युद्ध सन्धियां कीं। उसने तब अपना जंगी बेड़ा भूमध्य सागर में भेज दिया। जापान ने इसका मूल्य फ्रांस तथा इंगलैंड से प्राप्त किया।

लीसिंग-ईशी समझौता: नवम्बर, 1917 ई. में अमेरिकन मंत्री लीसिंग तथा जापानी राजदूत ईशी के बीच लीसिंग-ईशी का समझौता हुआ। इस समझौते के अनुसार अमेरिका ने यह स्वीकार किया कि अमरिकी की सरकार जापान को

Scanned with CamScanner

चीन में तथा जापान-भूमि के निकटवर्ती चीनी क्षेत्रों में विशेष अधिकारों को मान्यता देती है। परन्तु दोनों देशों ने चीन की अभिक्षेत्रीय अखंडता तथा खुले-द्वार की नीति में निष्ठा प्रकट की।

अमेरिका ने जापान के एशिया में साम्राज्य के प्रसार को अपने प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश तक नहीं दिया था। परन्तु 1917 ई. में जब अमेरिका विश्वयुद्ध में शरीक हो गया तो अमेरिका के राजनीतिज्ञों ने जापान के साथ समझौता करना आवश्यक समझा। जापान तो ऐसे अवसर की तलाश में था ही। अत: यह समझौता सम्पन्न हो गया।

1917 ई. में महायुद्ध की समाप्ति पर वर्सा-सन्धि-सम्मेलन हुआ। इसमें जापान को विश्व की पांच महान् शक्तियों के बीच स्थान मिला। पर इस सम्मेलन में चीन के प्रतिनिधियों ने जापान द्वारा हस्तगत शान्तुंग तथा प्रशांत महासागर के जर्मन द्वीपों को वापिस मिल जाने की मांग रखी। अमेरिकन राष्ट्रपति विल्सन चीन की आजादी के पक्ष में था। लेकिन फ्रांस, ब्रिटेन और इटली गुप्त सन्धियों के आधार पर जापान का विरोध करने में असमर्थ थे। अत: जापान को संतुष्ट करने के लिए महाशक्तियों ने वर्सा-सन्धि द्वारा शान्तुंग प्रदेश के सभी जर्मन अधिकार उसे दे दिये ओर उत्तरी प्रशांत महासागर के समस्त जर्मन द्वीपों को जापान ने अपने अधीन कर लिया। लेकिन राष्ट्रपति विल्सन को यह बात पसन्द नहीं आयी।

साइबेरिया अभियान: 1917 ई. में रूस में समाजवादी क्रान्ति हुई। निरंकुशवादी जारशाही का अंत हुआ। रूस में अराजकता तथा अव्यवस्था फैल गई। आस्ट्रेयाई सेना के चेक-बन्दियों ने चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रीय समर्थन में विद्रोह कर दिया। जून, 1918 ई. में उन्होंने ब्लाडीवास्टक पर कब्जा कर लिया। मित्र राष्ट्रों ने इस स्थिति का लाभ उठाकर अपनी सेना जापानी सेना के साथ वहां भेज दी। सम्पूर्ण पूर्वी साइबेरिया मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के अधीन आ गया। 1919 ई. में क्रान्तिकारी लाल सेना ने साइबेरिया पर अधिकार कर लिया। इस लाल सेना की विजय को देखकर 1920 ई. में मित्र राष्ट्रों ने अपनी सेना वापस बुला ली, किन्तु जापान ने अपनी सेना वापस न बुलाई। उसने उनकी मदद के लिए और सेना भेज दी। अब वहां जापान के 75,000 सैनिक एकत्रित हो गये। इस पर जापान को अपार धन व्यय करना पड़ा। इससे रूसी-जापान सम्बन्ध विच्छिन्न हो गये। अन्त में 1932 ई. में जापान को साइबेरिया से अपनी सेना

Scanned with CamScanner

वापस बुलानी पड़ी। यह साइबेरिया का अभियान जापान को बहुत महंगा पड़ा।

जापान ने आफुगुट को बिना चीन सरकार को खबर किये कुछ ऋण दे दिये। इनसे जापान का प्रसारवादी उद्देश्य और भी प्रकट हो गया। साइबेरिया अभियान तथा आफुगुट को ऋण देने के कारण चीनी मंत्रिमण्डल जापान के विरुद्ध हो गया।

युद्ध में प्रवेश के परिणाम: प्रथम विश्वयुद्ध ने सम्पूर्ण एशिया को प्रभावित किया। पहली और शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसने जापान को एशिया में पूरी छूट दे दी। कारण, यूरोप के देश स्वयं अपने महाद्वीप में ही इतने उलझ रहे कि उन्हें एशिया की ओर मुड़कर देखने का समय ही नहीं मिला। अत: मित्रराष्ट्रों का सहयोगी होने के नाते जापान को एशिया में अपनी मनमानी करने का मौका मिल गया। इस युद्ध से लाभ उठाकर जापान एशिया में जर्मनी के प्रभुत्व को समाप्त करना और अपनी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और भी ऊंची उठाना चाहता था। उसने चीन में जर्मनी के प्रभाव-क्षेत्र शान्तुंग पर अधिकार कर लिया। जापान की आर्थिक प्रगति में भी यह युद्ध काफी सहायक सिद्ध हुआ।[1] जापान की इस महत्वाकांक्षा का अन्दाजा यूआन-शिह-काई को लग गया था और उसने अमेरिकी मंत्री को पहले ही कहा था कि जापान इस युद्ध का लाभ उठाकर चीन पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करेगा। वस्तुत: जापान ने ऐसा ही किया।[2]

स्पष्ट है कि प्रथम विश्वयुद्ध से जापान को केवल लाभ ही हुआ और अपने साम्राज्यवादी मार्ग पर वह और दो कदम आगे बढ़ गया।

Scanned with CamScanner